इस मास में विशेषः साधना दीक्षा

गुरू आत्म स्थापन साधना

21 नवम्बर, गुरूपुष्यामृत योग

शिष्य जब समर्पण भाव में आ जाता है और वह गुरू के साथ एकाकार होने के लिये मन-मस्तिषक और हृदय से दृढ़ हो जाता है, तो गुरू-शिष्य के साथ आत्मलीन होकर उसे अपना **सम्पूर्ण** प्यार उड़ेल देते है। इस साधना द्वारा साधक की आत्मा में 'गुरू तत्व' का स्थापन हो जाता है, जो कि जीवन में हर सफलता का आधार है। समस्त भौतिक व आध्यात्मिक कामनाओं व इच्छाओं की पूर्ति करने में यह साधना अचूक फलदायी है।

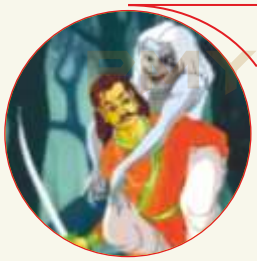

पूर्ण पौरूषता प्राप्ति वैताल सिद्धि साधना

22 नवम्बर, वैताल सिद्धि दिवस

यह जीवन आज जितने संघर्षों से भर गया है उतना तो शायद किसी भी युग में नहीं था। हमारे चारों ओर शत्रु ही शत्रु हैं जो हमें अकारण ही परेशान करते रहते हैं। आए दिन हम बम विस्फोट की खबरें भी सुनते ही रहते हैं और पूरा जीवन भय और ड़र से आक्रांत रहता है। ऐसे समय में वैताल साधना अत्यंत सहायक सिद्ध है। वीर, अजेय उस साधक के दूसरे नाम ही तो बन जाते हैं जिसे यह सिद्धि प्राप्त हो। शत्रु उसके नाम से थर-थर कांपते हैं। ऐसा साधक निर्भय होता है और जो निर्भय हो वही तो संसार में कुछ करने का साहस रखता है।

गृहस्थ सुख काम्य प्रयोग

28 नवम्बर, प्रदोष काल

योग्य जीवन साथी मिलना भी बिना दैवीय कृपा के सम्भव नहीं है। प्रायः देखने में आता है, कि व्यक्ति के पास धन, मान, पद, प्रतिष्ठा सभी कुछ होते हुये भी अशान्ति रहती है और इसका कारण होता है जीवन साथी से ताल मेल न बैठ पाना। इस प्रयोग द्वारा आपके गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुख, शांति, माधुर्य एवं सम्पन्नता आ जाती है। समस्त प्रकार का क्लेश, कलह व अभाव समाप्त होता है एवं पुत्र, पुत्री उन्नति करते हैं तथा निःसन्तान को सन्तान प्राप्त होती है।

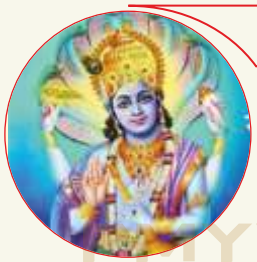

प्रत्याहार साधना

11 दिसम्बर, मोक्षदा एकादशी

इन्द्रियों तथा मन के निग्रह हेतु चित्त को नियंत्रित रखना आवश्यक है। इसके लिये योगी अपने दृढ़ इच्छा शक्ति, संकल्प व अभ्यास का अवलम्बन लेते हैं। परन्तु यह मार्ग लम्बा और दीर्घ कालिक है। साथ ही कमजोर मानस वाले व्यक्तियों के लिये इसमें सफल हो पाना सम्भव नहीं है। ऐसे मुमुक्षुओं के लिये प्रत्याहार की मंत्रात्मक साधना का भी विधान है, जिससे व्यक्ति अपनी इन्द्रियों को वशीभूत कर बुद्धि और चित्त से उज्जवल हो जाता है, उसमें ज्ञान की अभिवृद्धि होने से तेज झलकता है, अपने सांसारिक कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।